• वास्तु...

बच्चों की पढ़ाई

अक्सर देखा गया है कि बच्चों का अचानक से पढ़ाई-लिखाई से मन नहीं लगता और पढ़ाई से संबंधित चीजों को याद रख पाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। साथ ही वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ते कंपटीशन की वजह से बच्चे अक्सर तनाव में भी देखे गए हैं। बच्चों की इन समस्या का एक कारण कहीं ना कहीं वास्तु दोष भी हो सकता है। वास्तु दोष की वजह से बच्चे अक्सर बीमार रहते हैं या पढ़ाई में ध्यान नहीं लगता या आलस्य हावी रहता है। आज हम आपको वास्तु के कुछ ऐसे उपाय बताने जा रहे हैं, जिससे बच्चों की स्मरण शक्ति और बुद्धि में वृद्धि होती है और मन में उल्लास बना रहता है। आइए जानते हैं बच्चों की दुविधाओं को दूर करने के वास्तु उपाय...

▶ वास्तु शास्त्र के अनुसार, बच्चे जहां पढ़ाई करते हों वहां की दीवारे हमेशा बादामी, आसमानी, सफेद या हल्का फिरोजी रंग की होनी चाहिए। साथ बच्चों की स्टडी टेबल भी इसी रंग की हों तो और भी बेहतर रहेगा। बच्चों के पढ़ाई के कमरे कभी भी नीले, काले या लाल पेंट के नहीं होने चाहिए, ऐसा होने से बच्चों की पढ़ाई को नुकसान होता है।

▶ बच्चों के पढ़ाई के कमरे में रोशनी भरपूर होनी चाहिए। कम रोशनी नकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है, जिसकी वजह से बच्चों का मन स्थिर नहीं रहता है और पढ़ाई लिखाई में नीरसता आती है। साथ ही स्टडी रूम में टीवी, मैगजीन, सीडी प्लेयर, वीडियो गेम्स, रद्दी आदि अनुपयोगी सामान ना रखें, ये चीजें भी नकारात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं।

▶ बच्चों के पढ़ाई के कमरे में शिक्षा की देवी माता सरस्वती और बुद्धि के दाता भगवान गणेश की तस्वीर या प्रतिमा लगानी चाहिए। साथ ही बच्चों की स्टडी टेबल चौकोर होनी चाहिए और टेबल को कभी भी दीवार या दरवाजे से सटाकर ना रखें। साथ ही लाइट के नीचे या उसकी छाया में टेबल सेट ना करें, इससे बच्चों की पढ़ाई प्रभावित होती है।

▶ बच्चों के पढ़ाई का कमरा हमेशा उत्तर पूर्व दिशा में होना चाहिए। इस दिशा के स्वामी सूर्यदेव हैं और सूर्यदेव तेज, शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं। इस वजह से उत्तर पूर्व दिशा बच्चों के मन, बुद्धि और विवेक को प्रभावित करती है। ध्यान रखें कि बच्चों की पढ़ाई का कमरा कभी भी दक्षिण या दक्षिण पूर्व दिशा नहीं होनी चाहिए। इस दिशा में कमरा होने से बच्चों की पढ़ाई लिखाई में एकाग्रता नहीं रहती।

• व्रत...

पापांकुशा एकादशी

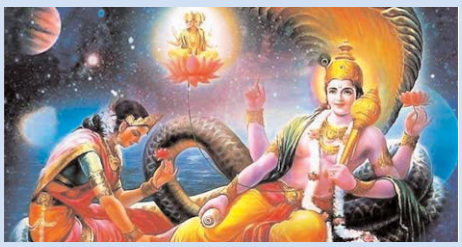

पापांकुशा एकादशी इस बार 13 अक्टूबर को है। इस दिन लोग भगवान विष्णु की पूजा करते हैं और विधिपूर्वक व्रत रखते हैं। सनातन धर्म में सभी एकादशियों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस समय आश्विन महीना चल रहा है। इस महीने के शुक्ल पक्ष में आने वाली एकादशी को पापांकुशा एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस दिन लोग पूरे विधि-विधान से व्रत रखते हैं और भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करते हैं। मान्यता है कि इस दिन भगवान विष्णु को सबसे प्रिय तुलसी भी उनके लिए व्रत करती हैं। यही वजह है कि इस दिन तुलसी को जल नहीं दिया जाता है। कहते हैं कि इस दिन तुलसी को जल देने से उनका व्रत खंडित हो जाता है, इसलिए पापांकुशा एकादशी के दिन तुलसी में जल नहीं देना चाहिए। इस दिन भगवान विष्णु को तुलसी दल अर्पित करने से वह बेहद प्रसन्न होते हैं और मनचाहा फल देते हैं।

हिंदू पंचांग के अनुसार आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 13 अक्टूबर को है। इस दिन पापांकुशा एकादशी का व्रत रखा जाएगा। एकादशी तिथि 13 अक्टूबर को सुबह 9 बजकर 08 मिनट से शुरू होकर 14 अक्टूबर को सुबह 6 बजकर 41 मिनट पर समाप्त होगी। व्रत का पारण 14 अक्टूबर को किया जाएगा।

संकल्प लेने के बाद लकड़ी की चौकी पर पीला कपड़ा बिछाकर उसके ऊपर भगवान विष्णु की मूर्ति रखें। विधि विधान से पूजा करें और भगवान को पंचामृत से स्नान करवाएं। उसके बाद पीले फूल और पीली मिठाई भगवान को चढ़ाएं।

पूरे दिन व्रत रखें और रात में भगवान विष्णु के विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें। अगले दिन, यानी द्वादशी को सुबह ब्राह्मण को भोजन और दान-दक्षिणा देकर ही व्रत खोलना चाहिए।

पापांकुशा एकादशी के दिन तुलसी पूजा के कुछ खास नियम हैं। मान्यता है कि इस दिन माता तुलसी, भगवान विष्णु के लिए व्रत रखती हैं। इसलिए इस दिन तुलसी में ना तो जल चढ़ाना चाहिए और ना ही दीपक जलाना चाहिए। ऐसा करने से माता तुलसी के व्रत में बाधा आ सकती है

एकादशी के दिन तुलसी माता की पूजा से वैवाहिक जीवन में खुशहाली आती है। इस दिन तुलसी माता को सुहाग की चीजें चढ़ाने और 11 परिक्रमा करने का विधान है। ऐसा करने से जीवन में अच्छे परिणाम मिलते हैं। मान्यता है कि सुहाग का सामान चढ़ाने से और परिक्रमा करने से तुलसी माता प्रसन्न होती हैं और आशीर्वाद देती हैं। इससे पति-पत्नी के बीच प्रेम बना रहता है और घर में सुख-समृद्धि आती है।

करवा चौथ की पूजा

करवा चौथ की पूजा को लेकर कई सारे नियम बनाए गए हैं, जिनका पालन बहुत जरूरी होता है। उन्हीं में से एक करवा भी है, जिसके बिना सुहागिन महिलाओं की पूजा अधूरी होती है।

करवा को लेकर लोगों की कई सारी धारणाएं हैं, जिनका पालन करना बहुत जरूरी है। दरअसल, दो करवा में अनाज भरने का विधान है, लेकिन कई सारी महिलाएं 1 करवे में अनाज रखती हैं...

सनातन धर्म में करवा चौथ व्रत का अपना एक खास महत्व है। इस दिन विवाहित महिलाएं समर्पण भाव के साथ निर्जला व्रत का पालन करती हैं। साथ ही अपने पति की लंबी उम्र के लिए माता करवा की पूजा करती हैं। वैदिक पंचांग के अनुसार, करवा चौथ कार्तिक माह में पूर्णिमा के बाद चौथे दिन मनाया जाता है। इस साल करवा चौथ का व्रत रविवार, 20 अक्टूबर को रखा जाएगा। ऐसा कहा जाता है कि इस व्रत को रखने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। साथ ही सौभाग्य में वृद्धि होती है।

करवा चौथ की पूजा को लेकर कई सारे नियम बनाए गए हैं, जिनका पालन बहुत जरूरी होता है। उन्हीं में से एक करवा भी है, जिसके बिना सुहागिन महिलाओं की पूजा अधूरी होती है। करवा को लेकर लोगों की कई सारी धारणाएं हैं, जिनका पालन करना बहुत जरूरी है। दरअसल, दो करवा में अनाज भरने का विधान है, लेकिन कई सारी महिलाएं 1 करवे में अनाज रखती हैं और दूसरे में पवित्र गंगाजल भरकर रखती हैं। फिर दूसरे करवे से ही माता को और चंद्रमा को अर्घ्य देती हैं, जबकि कुछ महिलाएं तीन करवे रखती हैं।

हालांकि कई क्षेत्रों में एक करवा सुहागिन और दूसरा माता करवा और तीसरा संतान के लिए रखा जाता है। जानकारी के लिए बता दें, करवा अपने-अपने स्थान और मान्यताओं के अनुसार उपयोग किया जाता है। इसलिए अपने घर के बड़े-बुजुर्गों से सलाह लेकर ही पूजा की परंपराओं का पालन करें।

● **क्या होती है सरगी**- सरगी करवाचौथ के दिन व्रत को शुरू करने की रस्म होती है। जिसके बिना करवाचौथ का व्रत शुरू नहीं किया जा सकता। सरगी सास द्वारा दी जाती है जिसमें खाने पीने की वस्तुओं सहित 16 शृंगार की सभी वस्तुएं और पूजन सामग्री होती है। सरगी में फल, मिठाइयां, ड्रायफ्रूट, दिए जातें हैं, जिन्हें करवाचौथ के दिन सूर्योदय से पहले ग्रहण कर के उपवास शुरू किया जाता है। जिन व्रतियों की सास नहीं है वह अपनी जेठानी से सरगी ले सकतीं हैं।

● **सरगी क्यों खाई जाती है**- करवाचौथ का यह व्रत बहुत ही दुर्लभ और कठोर होता है, जिसमें निर्जला व्रत रहना होता है, इसलिए सरगी खाई जाती है. इसमें पौष्टिक और आसानी से पचने वाले व्यंजन अथवा अन्य चीजें रखी जाती हैं।

● **क्या है सरगी का महत्व**- सरगी एक परंपरा है जिसके बिना इस व्रत की शुरुआत नहीं की जा सकती. साथ ही सरगी में दिए जाने वाले व्यंजन ग्रहण करके ही व्रत की शुरुआत होती है, इसलिए यह व्रत का महत्त्वपूर्ण भाग है।

● **सरगी खाने का शुभ मुहूर्त**-सभी व्रती माताएं प्रात: ब्रम्ह मुहूर्त में 3 बजकर 30 मिनट से 4 बजकर 30 मिनट तक सरगी खा लें. यह सब से उत्तम समय होता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• काम की बात...

घर में तस्वीरें

दैनिक जीवन में वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों का ध्यान रखने से काफी सकारात्मक परिणाम देखने को मिल सकते हैं। लोग अपने घरों में तरह-तरह की तस्वीर लगाना पसंद करते हैं। साथ ही यह घर की खूबसूरती को भी बढ़ा देती हैं। ऐसे में यदि आप तस्वीरों का चयन करते समय वास्तु के नियमों का ध्यान रखते हैं, तो इससे आपको काफी लाभ देखने को मिल सकता है। वास्तु शास्त्र की मान्यताओं के अनुसार, घर में साथ दौड़ते हुए घोड़ों की तस्वीर लगाना अत्यंत शुभ माना जाता है। इससे करियर में उन्नति देखने को मिल सकती है। लेकिन इसका लाभ आपको तभी मिल सकता है, जब आप दिशा का भी ध्यान रखें। इसलिए इस तस्वीर को घर की दक्षिण दिशा में लगाना चाहिए। घर में बुद्ध की तस्वीर लगाने से सुख-शांति का माहौल बना रहता है। इसके लिए आपको इसे घर की पूर्व या फिर उत्तर-पूर्व दिशा में लगाना चाहिए। वहीं अगर आप घर की दक्षिण दिशा में मोर की तस्वीर लगाते हैं, तो इससे आपके भाग्य में वृद्धि हो सकती है। इसी के साथ घर में कमल की तस्वीर को उत्तर-पूर्व दिशा में लगाने से भी आपको लाभ देखने को मिल सकता है।

• मनी प्लांट...

मनी प्लांट को हमेशा घर के अंदर लगाना शुभ माना जाता है। यदि आपने कांच की बोतल में मनी प्लांट लगाया हुआ है, तो समय-समय पर इसका पानी बदलते रहें। साथ ही मनी प्लांट को कभी सूखने भी नहीं देना चाहिए, वरना यह आपकी समृद्धि में बाधक बन सकता है। यदि कुछ पत्तियां सूख भी गई हैं, तो उन्हें तुरंत हटा देना चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि मनी प्लांट की बेल जमीन को स्पर्श न करे, क्योंकि इसे अशुभ माना जाता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित